तुषार कांति घोष

तुषार कांति घोष (21 सितंबर 1898 - 29 अगस्त 1994) एक भारतीय पत्रकार और लेखक थे। साठ वर्षों तक, अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले तक, घोष कोलकाता में अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्र *अमृता बाज़ार पत्रिका* के संपादक थे । उन्होंने इंटरनेशनल प्रेस इंस्टीट्यूट और कॉमनवेल्थ प्रेस यूनियन जैसे प्रमुख पत्रकारिता संगठनों के नेता के रूप में भी काम किया । [1] घोष को देश की स्वतंत्र प्रेस में उनके योगदान के लिए "भारतीय पत्रकारिता के महापुरुष" [2] और "भारतीय पत्रकारिता के डीन" के रूप में जाना जाता था।

जीवन और कार्य

घोष ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के बंगबासी कॉलेज में अध्ययन किया । *उन्होंने अमृता बाज़ार पत्रिका* के संपादक के रूप में अपने पिता का स्थान लिया और भारत भर में सहयोगी समाचार पत्रों की स्थापना की, साथ ही *जुगांतर* नामक बंगाली भाषा के समाचार पत्र की भी स्थापना की। [4]

घोष भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक पत्रकार के रूप में प्रमुखता से उभरे । वह महात्मा गांधी और अहिंसा आंदोलन के समर्थक थे। ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों ने 1935 में घोष को एक लेख के लिए कैद कर लिया, जिसमें ब्रिटिश न्यायाधीशों के अधिकार पर हमला किया गया था। [5]

संभवतः एक अपोक्रिफ़ल कहानी के अनुसार, बंगाल प्रांत के औपनिवेशिक गवर्नर ने एक बार घोष को सूचित किया था कि जब वह घोष का पेपर नियमित रूप से पढ़ते हैं , तो इसका व्याकरण अपूर्ण था और "यह अंग्रेजी भाषा के लिए कुछ हिंसा करता है।" घोष ने कथित तौर पर उत्तर दिया, "महामहिम, यह स्वतंत्रता संग्राम में मेरा योगदान है।"

एक पत्रकार के रूप में अपने काम के अलावा, घोष ने काल्पनिक उपन्यास और बच्चों की किताबें भी लिखीं। [5] 1964 में, साहित्य और शिक्षा में उनके योगदान के लिए उन्हें भारत के तीसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान, पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। घोष की संक्षिप्त बीमारी के बाद 1994 में कोलकाता में हृदय गति रुकने से मृत्यु हो गई।